बालविज्ञान प्रस्तुत

दादा भगवान

भाग-६

चित्रकथा

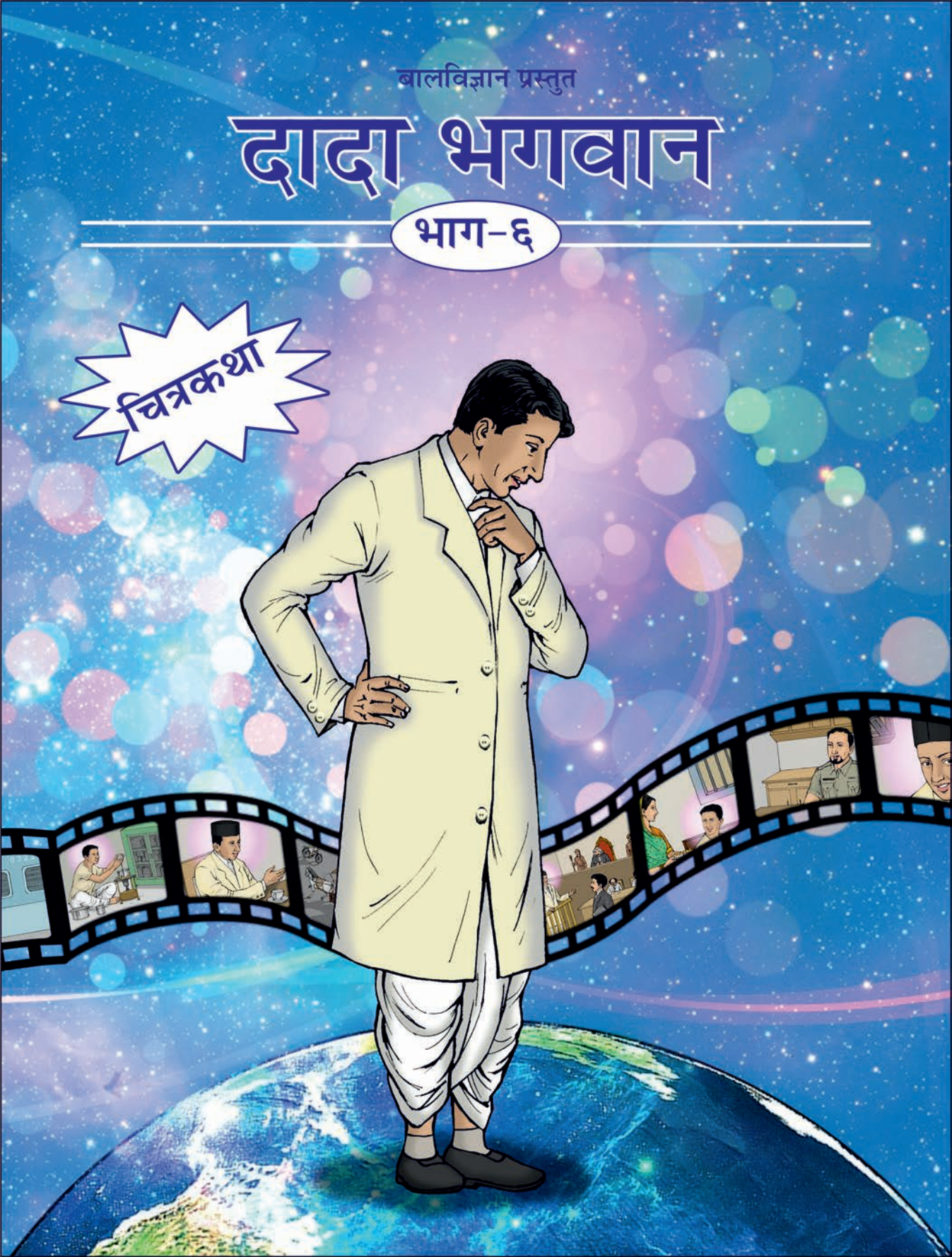

प्रस्तावना

'दादा भगवान' वर्तमान युग के अद्वितीय आत्मज्ञानी पुरुष थे। उन्हें बचपन से ही आत्मा को पहचानने की, परम तत्व को प्राप्त करने की लगन थी। रोज़मर्रा के जीवन में होनेवाली घटनाओं का वे वैज्ञानिक तरीके से विश्लेषण करते थे, उनके पीछे रही हुई पुरानी भ्रामक लौकिक मान्यताओं से दूर रहकर वे सच्ची समझ को अपनाते थे। तार्किक प्रश्नावलियों द्वारा चिंतन करके दुनिया की पज़ल सोल्व करने का उन्होंने अद्‌भुत तरीका अपनाया था। उनके गृहस्थ जीवन की और व्यवसायिक जीवन की कितनी ही प्रेरणादायक घटनाएँ उनके ऐसे ही संशोधक हृदय को प्रतिबिम्बित करती हैं।

सभी के लिए दादा भगवान की बातें जीवन जीने की कला सीखने के लिए बहुत सुंदर दिशानिर्देष करेंगी और जीवन के ध्येय को समझने की प्रेरणा देंगी। यह पुस्तक हमें उनके प्रेरणादायक जीवन की घटनाओं का हृदयस्पर्शी परिचय करवाती है।

दादा भगवान के जीवन की घटनाओं को उनके ही श्रीमुख से निकली हुई वाणी में से लेकर उसी रूप में चित्रांकित करने के प्रयत्न किए गए हैं। आपको इस पुस्तिका में चित्र या लेखांकन में कोई भी त्रुटि लगे तो वह संकलनकर्त्ता की है। ऐसी कोई भी कमी रह गई हो तो उसके लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

– जय सच्चिदानंद

प्रकाशक :
दादा भगवान आराधना ट्रस्ट
५, ममता पार्क, सोसायटी, नवगुजरात कॉलेज के पीछे
उस्मानपुरा, अमदाबाद - ३८००१४, गुजरात, भारत,
फोन : (०७९) २७५४०४०८
E-mail: info@dadabhagwan.org
Website: www.dadabhagwan.org

©: All Rights Reserved – Dada Bhagwan Aradhana Trust

Address as above
मुद्रक :
अंबा ऑफसेट
B - ९९, इल्क्ट्रॉनिक जी.आई.डी.सी., K - ६, सेक्टर - २५ गाँधीनगर,
गुजरात (भारत) फोन : (०७९) ३९८३०३४१/४२

प्राप्ति स्थान :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी, अमदाबाद - कलोल हाइवे,
अडालज, जी. गाँधीनगर - ३८२४२१, गुजरात, भारत
फोन : (०७९) ३९८३०९००, ३९८३००३४
E-mail: balvignan@dadabhagwan.org
Available on online store : https://store.dadabhagwan.org/
Website: kids.dadabhagwan.org

दादा भगवान

भाग ६

अंबालाल भाई के यहाँ रोज़ दोपहर को एक रिश्तेदार छोटा भाई पटेल आकर बैठते थे। उनके साथ हर रोज़ चाय-पानी और 'पापड़-पापडी' जैसा हलका फूलका नाश्ता भी करते थे। उसके बाद थोड़ी देर के लिए सत्संग करके वे अपने घर चले जाते। एक दिन वे आए तो सही, लेकिन ज़रा जल्दी में थे।

उन दिनों अंबालाल भाई को भी ऐसा आग्रह रहता था कि "मेहमान को चाय पिलाए बगैर नहीं जाने देना चाहिए"।

हीरा बा रसोईघर में काम में व्यस्त थीं।

जैसे ही हीरा बा स्टोव जलाकर चाय बनाने लगीं, तभी एक पड़ोसन आई।

हीरा बा को लगा कि "यह छोटा भाई तो रोज़ आते हैं और चाय-पानी व सत्संग करते हैं, इसलिए आराम से बैठेंगे ही न?

हाँ, ले जाइए, मैं तो सिगड़ी जला लूँगी।

नहीं, नहीं, बैठिए न! चाय बन गई होगी। अरे! सुनती हो? जल्दी चाय लाओ न!

अरे, अंबालाल भाई, बहुत टाइम हो गया। अब मैं चलता हूँ, वर्ना देर हो जाएगी।

अंबालाल भाई को पता नहीं था कि अंदर के संयोग बदल गए हैं। हीरा बा को भी पता नहीं था कि बाहर चाय की जल्दी है। उस दिन तो बहुत गड़बड़ हो गई। फिर अंबालाल भाई को लगा कि अंदर कुछ परेशानी है, इसलिए वे उठकर अंदर देखने गए।

पड़ोसन आकर स्टोव ले गई, इसलिए मैंने सिगड़ी जलाई है। थोड़ी ही देर में चाय बन जाएगी।

ओह! ऐसी बात है?

लेकिन उस दिन रसोईघर की बात मेहमान को नहीं बताना चाहते थे।

हीरा बा चाय तो दे गईं, लेकिन पापड़ लाने में देर लगी।

कुछ देर बाद भी हीरा बा पापड़ लेकर नहीं आईं, तो छोटा भाई परेशान होने लगे।

घर में कलह व कषाय न हो और चलन चलाकर सामने वाले को दुःख न हो इसलिए बहुत सोचकर "चलन नहीं चलाना है" ऐसी सेटिंग की। वास्तव में संयोगों का ही चलन रहता है। खरा सिक्का तो किसी के भी हाथ में जा सकता है जबकि खोटा सिक्का भगवान के पास बैठकर परमात्मा के आनंद में रहता है।

एक बार अंबालाल भाई को गवाह के तौर पर कोर्ट में जाना था। एक वकील को केस सौंपा गया था।

केस जीतने के लिए वकील ने काफी झूठी बातें मिलाकर गवाही तैयार की थी।

उनकी बात सुनकर वकील चिढ़ गए।

अगर आप मेरे कहे अनुसार नहीं बोलोगे तो मैं केस हार जाऊँगा और उससे बाहर मेरी बदनामी होगी।
लेकिन मैंने जो देखा है, क्या वह नहीं कहना है?
नहीं, मैं जितना कहूँ उतना ही आपको बोलना है। समझ में आया?
उनकी इज्जत खराब हो, तो क्या झूठ बोलकर अपनी इज्जत खराब करूँ?
भाई, रात को सोचकर मैं आपको कल बताऊँगा कि "ऐसा कर पाऊँगा या नहीं"। क्योंकि आज तक मैंने ऐसा जोखिम नहीं उठाया है।

वकील कह रहे हैं, वैसा झूठ तो आज तक कभी बोला नहीं है तो ऐसा करने में क्या जोखिम है?

इसका जवाब उन्हें अंदर से ही मिला।

इस संयोग में तो वकील जैसा कहे, वैसा ही बोलना ठीक है। लेकिन ऐसा झूठ कैसे बोल सकता हूँ? पर यह तो वकील सिखा रहे हैं और सीखने वाला तो तोता... तोता सिखाया हुआ बोलता है तो उसमें तोते की जोखिमदारी नहीं रहती। सामने वाला कहता है, बोलो "राम", तो वह बोलता है, "राम"।

दूसरे दिन अंबालाल भाई वकील के पास गए और उनके कहे अनुसार गवाही देने के लिए तैयार हो गए।

आप जैसा समझाएँगे, उसी अनुसार मैं बोलूँगा...

कोर्ट में...

बहुत बुद्धिपूर्वक जवाब दे रहे हैं।

साहब, ये पटेल तो सारे जवाब बहुत प्रेम से दे रहे हैं।

आखिरकार, अंबालाल भाई वह केस जीत जाते हैं।

"खुद के सिद्धांत को पकड़े रखने से इस केस का हल जल्दी नहीं आएगा और खुद का ज्यादा नुकसान होगा", इसलिए संयोगों में फँसे हुए अंबालाल भाई ने समझदारी से वकील के ताबे में रहकर केस का हल निकाला।

एक बार अंबालाल भाई को प्रातःकाल जल्दी उठकर दूसरे शहर जाना था। इसलिए सुबह चार बजे चाय बनाने बैठे। तब चाय में शक्कर डालते वक्त शक्कर के कुछ दाने ज़मीन पर गिर गए। उन्होंने देखा कि चींटियों की कतार शक्कर के पास पहुँच गई। एक के बाद एक चींटी शक्कर का दाना लेकर ज़मीन में बनाए हुए अपने बिल में जा रही थी।

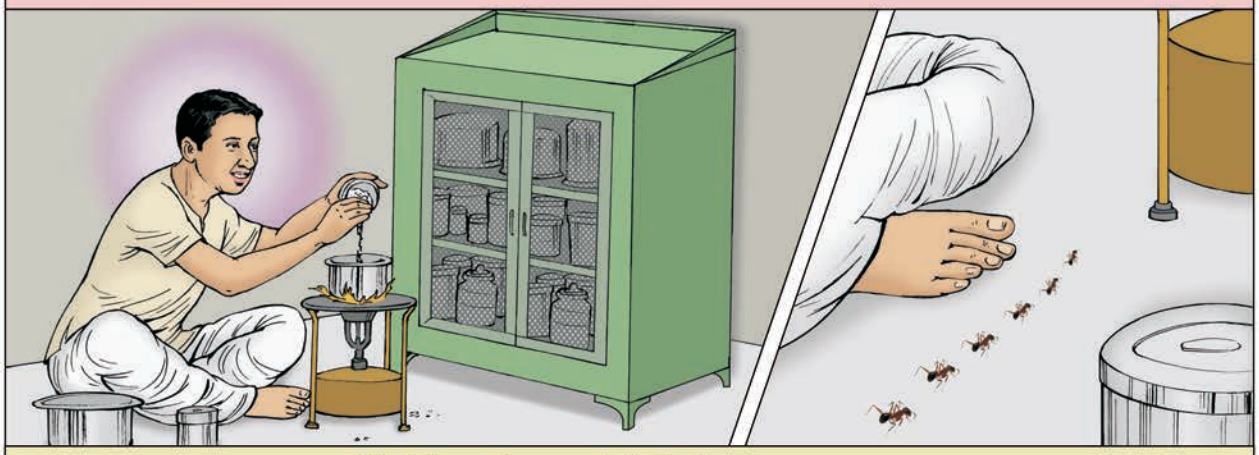

चींटी को देखकर अंबालाल भाई सोचने लगे।

अंबालाल भाई ने सुंदर सार निकाला कि "लोभी बनकर कब तक जमा करते रहेंगे? समय रहते सावधान हो जाना चाहिए और जमा किया हुआ अच्छी जगह पर इस्तेमाल कर लेना चाहिए, ताकि मोक्षमार्ग तक पहुँचने के लिए कुछ कमाई हो सके! बाकी जहाँ लोभी होते हैं, वहाँ पर ठग होते ही हैं! कुदरत का ऐसा क्रम नियत है! इसीलिए जो जमा करने से बाज़ नहीं आते, आखिर में उसका सब कुछ लुटेरे ले जाते हैं।"

अंबालाल भाई के मामा के एक बेटे थे। अंबालाल भाई जब ननिहाल जाते, तब वे खुद अंबालाल भाई का बिस्तर लगाने का ध्यान रखते थे। उन्हें अंबालाल भाई के प्रति इतना लगाव था कि वे रोज़ उनका बिस्तर लगा देते थे, किसी और को छूने भी नहीं देते थे।

मामा के वे बेटे एक बार अंबालाल भाई के यहाँ रुकने आए। उस समय एक दिन घर में इतने मेहमानों का आना-जाना लगा रहा कि तीन-चार बार चाय-पानी के लिए बाहर से दूध मँगवाना पड़ा।

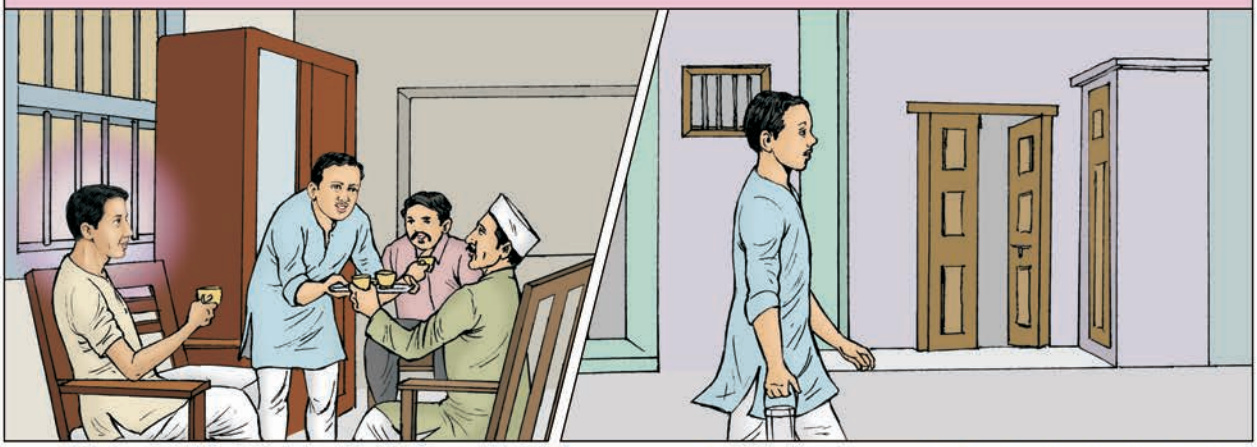

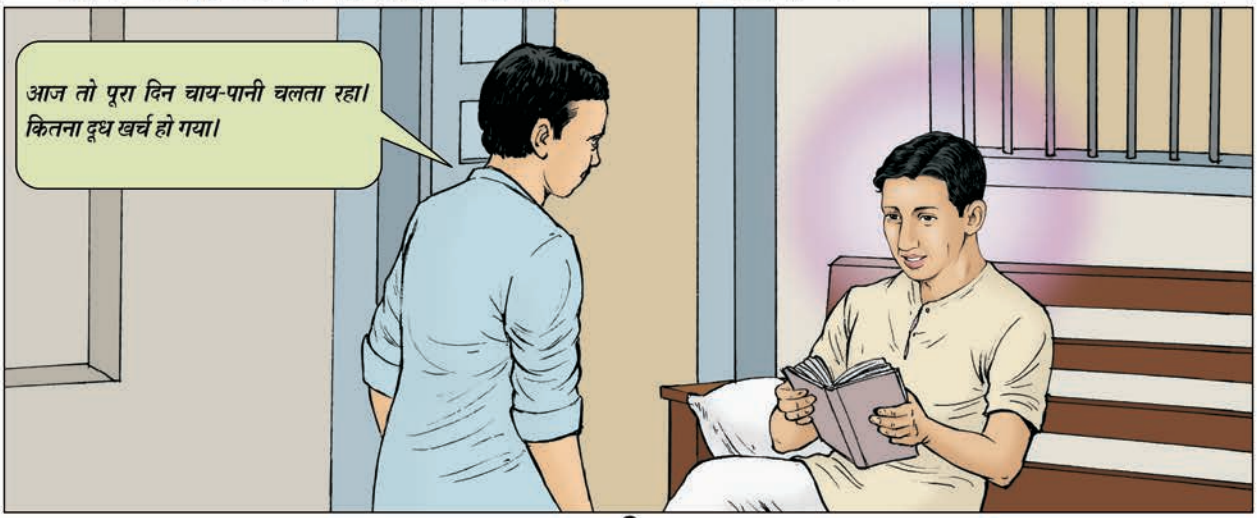

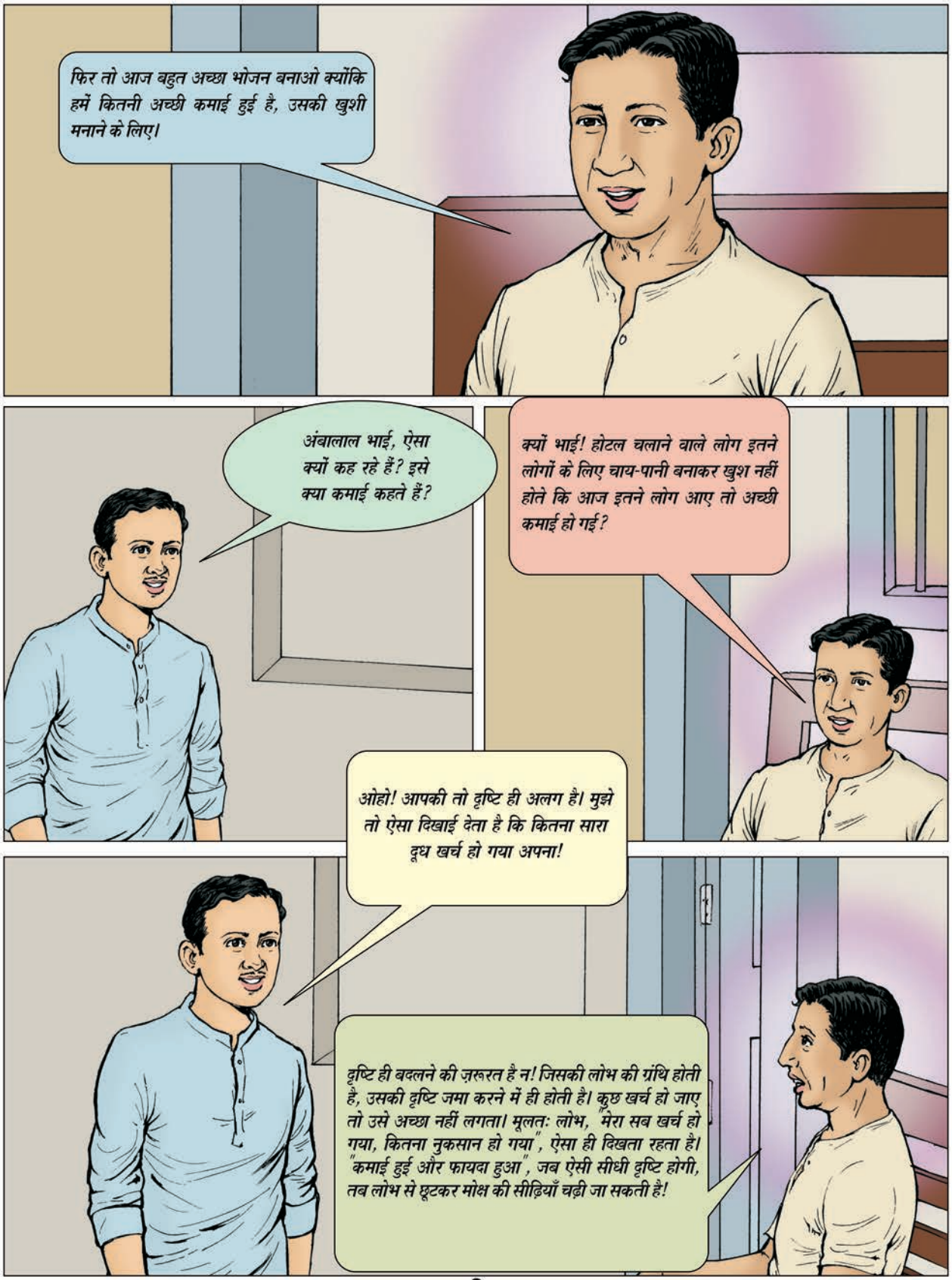
फिर तो आज बहुत अच्छा भोजन बनाओ क्योंकि हमें कितनी अच्छी कमाई हुई है, उसकी खुशी मनाने के लिए।
अंबालाल भाई, ऐसा क्यों कह रहे हैं? इसे क्या कमाई कहते हैं?
क्यों भाई! होटल चलाने वाले लोग इतने लोगों के लिए चाय-पानी बनाकर खुश नहीं होते कि आज इतने लोग आए तो अच्छी कमाई हो गई?
ओहो! आपकी तो दृष्टि ही अलग है। मुझे तो ऐसा दिखाई देता है कि कितना सारा दूध खर्च हो गया अपना!
दृष्टि ही बदलने की ज़रूरत है न! जिसकी लोभ की ग्रंथि होती है, उसकी दृष्टि जमा करने में ही होती है। कुछ खर्च हो जाए तो उसे अच्छा नहीं लगता। मूलतः लोभ, "मेरा सब खर्च हो गया, कितना नुकसान हो गया", ऐसा ही दिखता रहता है। "कमाई हुई और फायदा हुआ", जब ऐसी सीधी दृष्टि होगी, तब लोभ से छूटकर मोक्ष की सीढ़ियाँ चढ़ी जा सकती है!

अंबालाल भाई की धर्मपत्नी हीरा बा को एक आँख में रतौंधी थी। इलाज के लिए डॉक्टर के पास गए। डॉक्टर कुछ इलाज करने गए तो उससे आँख को नुकसान पहुँचा और आँख चली गई।

अंबालाल भाई और हीरा बा को संतान नहीं थीं और उसमें भी हीरा बा की आँख चली गई। इसलिए लोगों को तो ऐसा लग रहा था कि अंबालाल भाई वापस विवाह करने के पात्र हो गए। किसी भी तरह से बेटी को ठिकाने लगाने के लिए उत्सुक माँ-बाप के लिए "दूल्हा" मिल गया। भादरण के एक पटेल, अपने साले की बेटी की शादी के लिए पूछताछ करने अंबालाल भाई के पास आए।

आप कहना क्या चाहते हैं?
आपको संतान भी नहीं है।
संतान नहीं है, लेकिन मेरे पास ऐसा कोई बड़ौदा स्टेट भी नहीं है, जो उन्हें देनी हो।
ऐसा है कि मेरे साले की बेटी ब्याह के लायक हो गई है न...
यानी उसकी शादी करने के लिए मुझसे ऐसा सब कह रहे हैं?
हम आपको दहेज दें, तब तो स्वीकार करेंगे न?
ऐसा करने से हीरा बा को दुःख होगा या नहीं होगा? एक आँख चली गई, इसमें वे बेचारी क्या करें? अरे, अगर दोनों आँखें चली जाएँगी तो भी मैं उन्हें हाथ पकड़कर चलाऊँगा, लेकिन उनका साथ नहीं छोड़ूँगा।
हमने विवाह के समय हीरा बा को प्रोमिस दिया था कि "ज़िंदगी में चाहे कैसे भी संयोग आएँ, हम साथ रहेंगे"। इसे तो "प्रोमिस टू पे" (वचन) कहते हैं। यानी मैं कभी भी मुकर नहीं सकता । दुनिया चाहे इधर से उधर हो जाए तब भी "प्रोमिस मतलब प्रोमिस!"

अंबालाल भाई का कॉन्ट्रैक्ट पर कंस्ट्रक्शन का काम था। अलग-अलग प्रकार का चिनाई का काम करने के लिए कई कॉन्ट्रैक्ट किए थे। समुद्र किनारे जेटी पर जहाँ स्टीमर रुकते हैं, वैसी जेटी बनाने के भी उन्होंने कई कॉन्ट्रैक्ट लिए थे। एलीफेन्टा, जयगढ़, मांडवी जैसे कई बंदरगाहों पर उन्होंने जेटी बनाने का काम किया था। उसे बनाने के लिए समुद्र में चालीस-पचास फुट की गहराई से काम शुरू करना पड़ता था।

कॉन्ट्रैक्ट का व्यापार था इसलिए अलग-अलग जगह, साइट पर जहाँ काम चल रहा हो, वहाँ देखने जाना पड़ता था। साइट पर ईंटें, रेत और सिमेन्ट की बोरियाँ वगैरह गधों पर लादकर लाई जाती थीं।

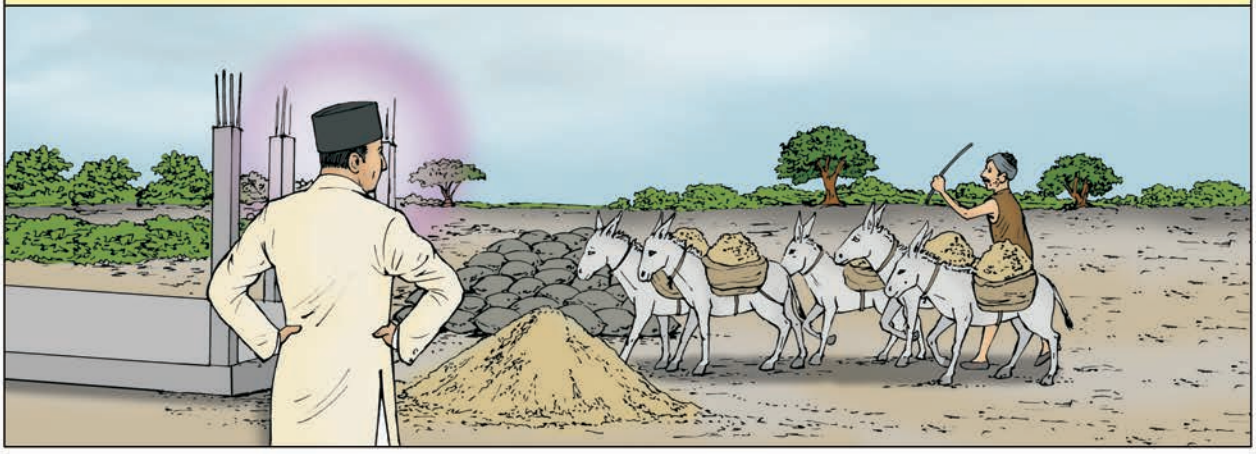

अंबालाल भाई खुद के व्यवसाय में छोटे से छोटे व्यक्ति के साथ भी आत्मीयता रखते थे। व्यवसायिक या व्यवहारिक प्रसंगों में नई बातें या व्यक्तियों के स्वभाव-प्रकृति पहचानने के लिए उनका निरीक्षण हमेशा चलता ही रहता था और उसके आधार पर वे उसकी आध्यात्मिक कड़ियाँ भी ढूंढ निकालते।

जयगढ़ में जेटी बनाने का काम पूरे वेग से चल रहा था। उन दिनों मुंबई से तीन व्यक्ति अंबालाल भाई से मिलने उनके ऑफिस आए।

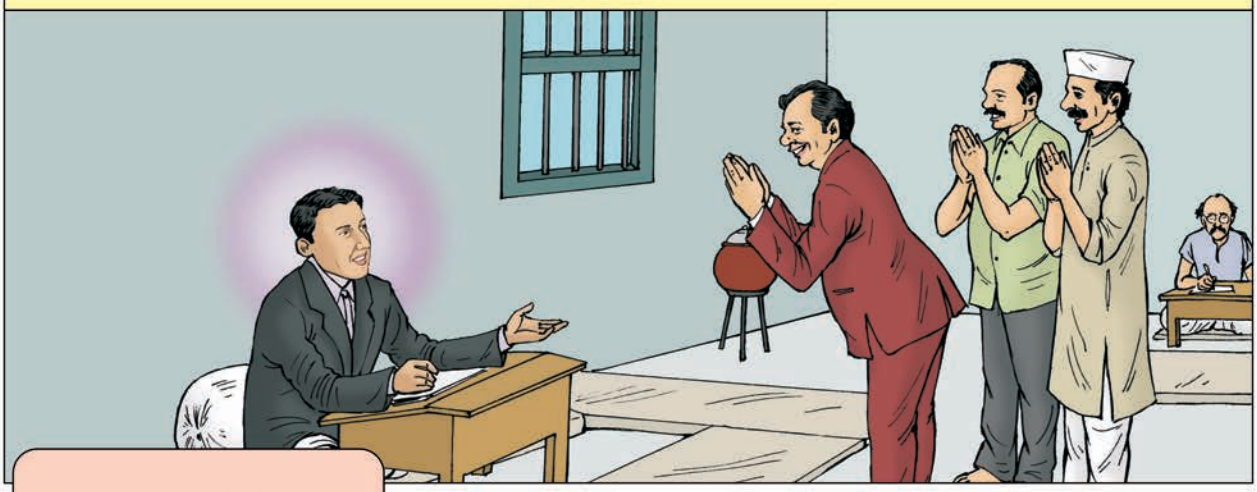

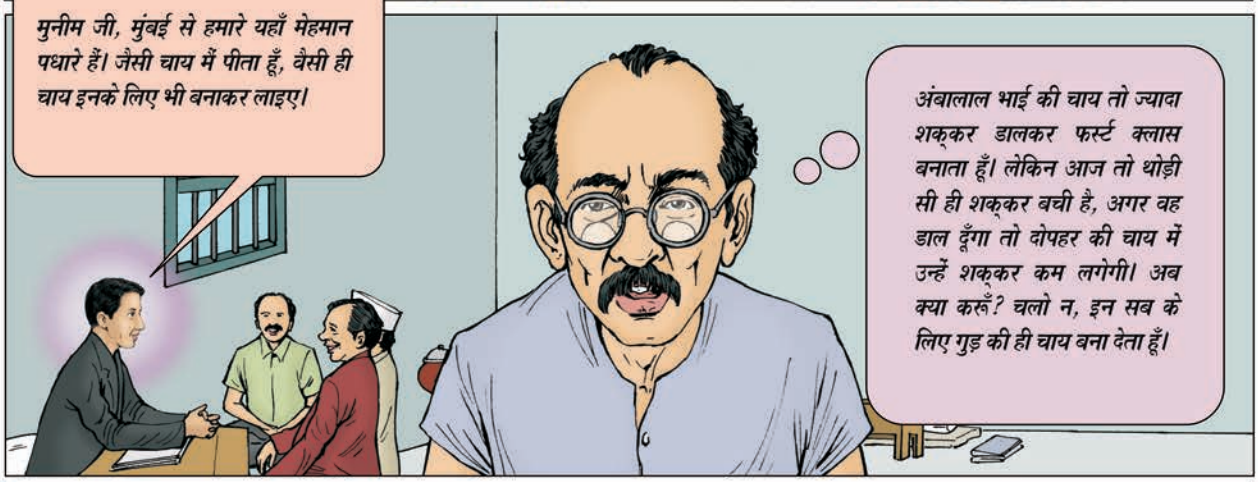

मुनीम जी तीन कप चाय ले आए। दादाजी (अंबालाल जी) ने तो पी ली थी, इसलिए उनके लिए नहीं लाए।

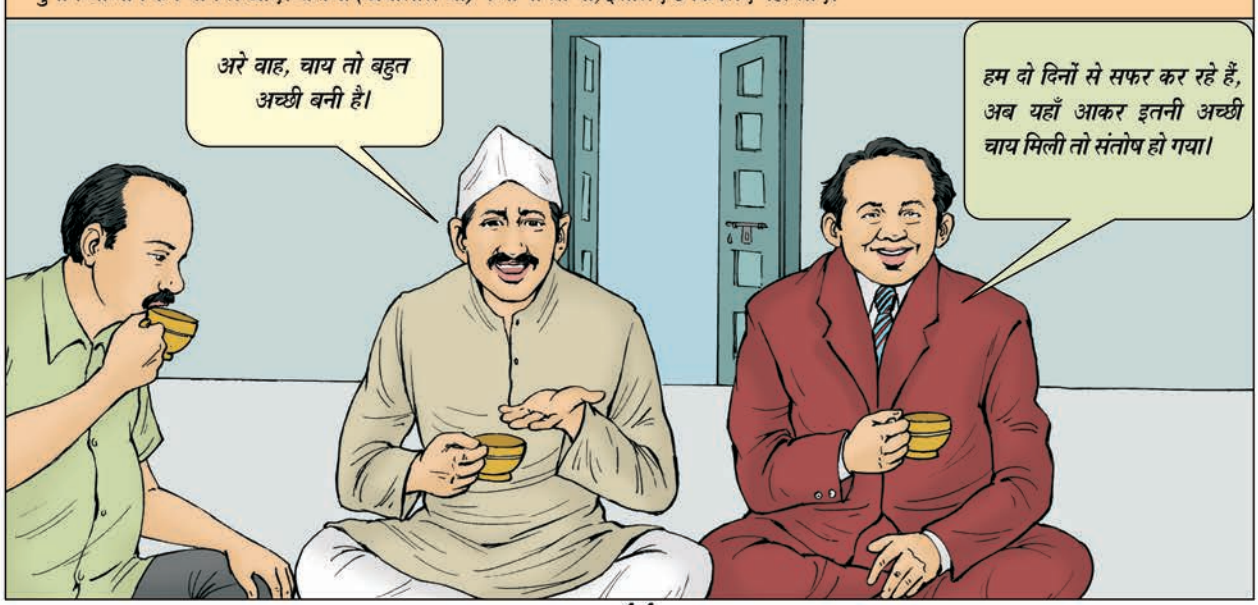

वे सब तो काम की बातें करके चले गए।

मुनीम जी, आज आपने बहुत अच्छी चाय बनाई। सब तारीफ कर रहे थे।

अंबालाल भाई, मैंने तो अभी गुड़ डालकर चाय बनाई थी।

अरे! गुड़ वाली चाय पिलाई, फिर भी इन लोगों ने तो बहुत तारीफ की।

गुड़ की बात सुनकर आप परेशान हो गए, लेकिन कई लोगों को तो ऐसा पता तक नहीं चलता।

गुड़ डालकर? मैंने तो आपको जैसी मेरे लिए बनाते हो, वैसी चाय बनाने के लिए कहा था!

हाँ भाई, लेकिन क्या करता? शक्कर कम थी इसलिए मैंने सोचा कि दोपहर की चाय के लिए रख दूँ, इसीलिए अभी गुड़ डालकर चाय बना दी।

अरे, ये तो मुंबई से आए हुए मेहमान थे।

मुंबई के हों या कहीं के भी हों! गुड़ की है या शक्कर की, इसका लोगों को ज्यादा पता नहीं चलता।

यह तो सोचने जैसी बात है! मिक्स्चर होने के बाद अगर दुनिया के लोगों को इसका पता नहीं चलता कि मिठास गुड़ की थी या शक्कर की, तब तो फिर दुनिया में सही बात का पता लगना कितना मुश्किल होगा!

एक बार एक व्यापारी मित्र से मिलना हुआ। वह बहुत चिंता में लग रहा था।

व्यापार में बड़ा रिस्क फेक्टर समाया हुआ ही रहता है। इच्छा से ज्यादा कमाई करवाए तो वह व्यापार खुशी लाता है, लेकिन यदि बड़ा नुकसान हो गया तो? कितनी तकलीफ होती है? इसीलिए हर बार व्यापार शुरू करने से पहले वे मानसिक तौर पर सारे विषम संयोगों के बारे में सोचकर तैयारी कर लेते थे। अंत में तो, मन क्या मानता है, उसी आधार पर सुख-दुःख या नफा-नुकसान तय होते हैं।

ऐसी ही एक घटना अहमदाबाद के मिल-मालिक के साथ भी हुई थी...

एक बार वे अंबालाल भाई के पास घबराए हुए आए।

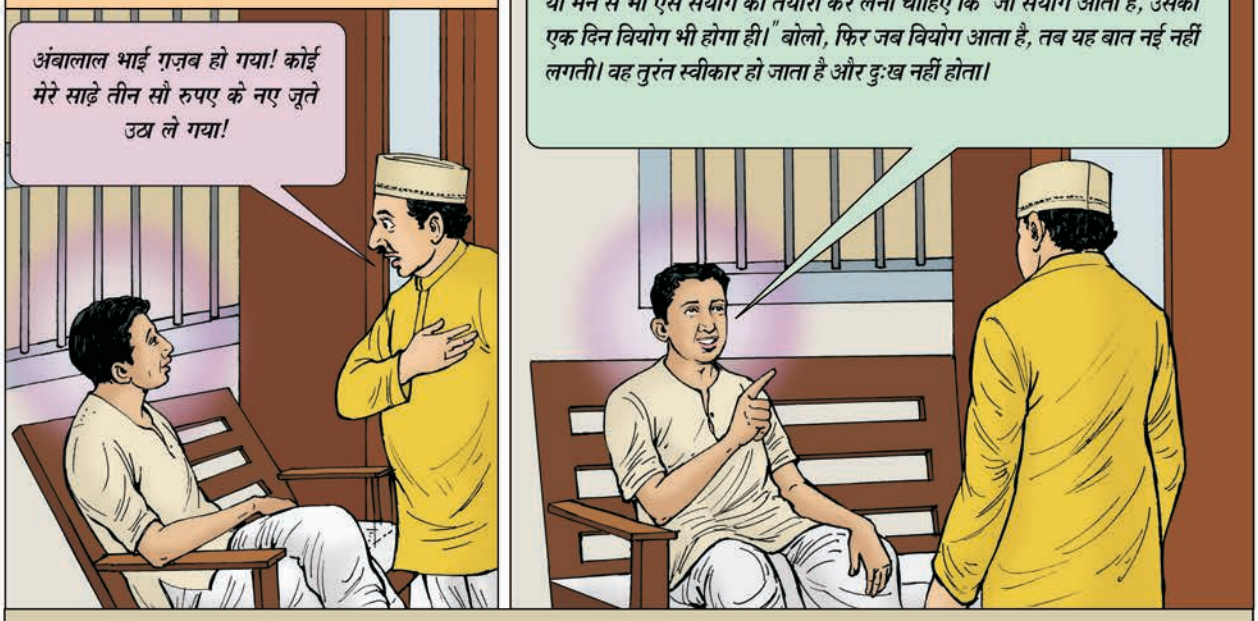

हर एक संयोग में अंबालाल भाई इस प्रकार की मानसिक सेटिंग करते थे, इसीलिए वे हमेशा सुखी ही रहते थे।

अंबालाल भाई ने कॉन्ट्रैक्टर के व्यापार के अलावा कुछ सालों तक "बिटको इंजीनियरिंग कंपनी" नामक एक लोहे का कारखाना भी चलाया था। यह उन्हीं दिनों की बात है...

एक दिन जब अंबालाल भाई अपने भागीदार के साथ कारखाने के कामकाज में व्यस्त थे, तभी उनके गाँव का एक आदमी वहाँ आ पहुँचा।

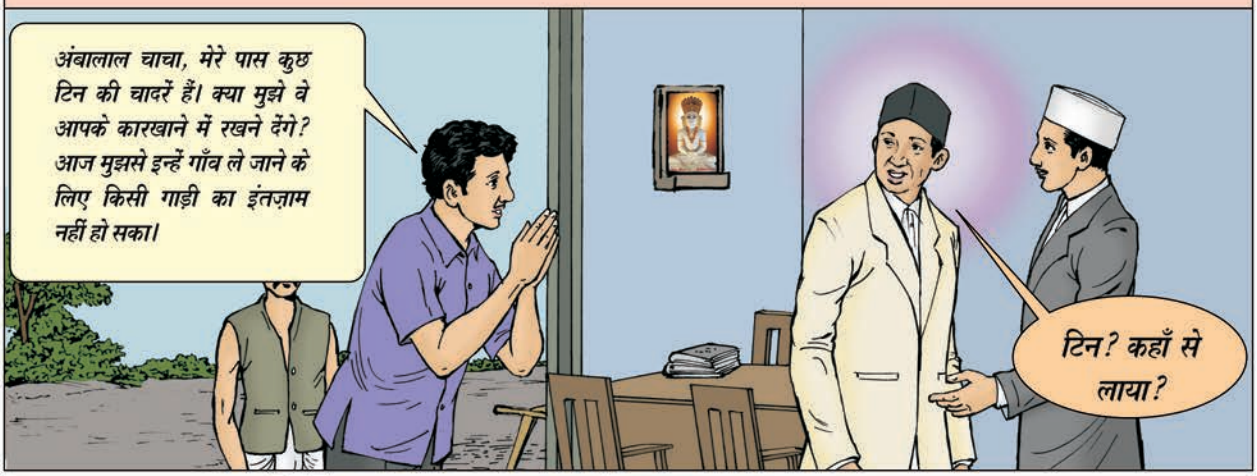

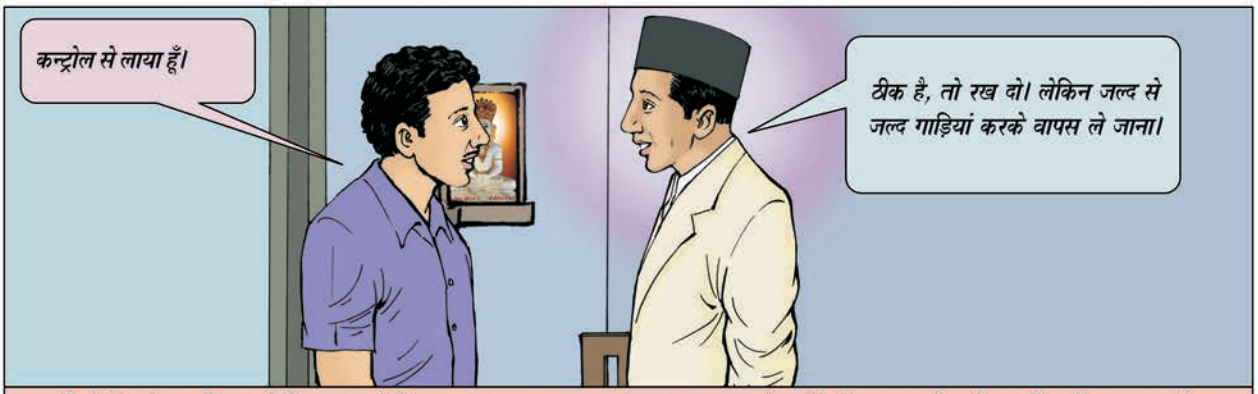

उन दिनों टिन के क्रय-विक्रय के लिए सरकारी नियमानुसार चलना पड़ता था। सरकार का कन्ट्रोल होने के कारण परमिट दिखाए बिना टिन का क्रय-विक्रय नहीं कर सकते थे।

उस व्यक्ति ने, एक बक्से में छः से आठ टिन भरे हुए, ऐसे छः बक्से अंबालाल भाई के कारखाने में रख दिए। अंबालाल भाई ने भागीदार को भी बता दिया कि बेचारा भले ही रखे, इसमें हमारा क्या नुकसान है?

फिर दस-बारह महीनों तक वह आदमी वे बक्से लेने आया ही नहीं। कारखाने में बक्से पड़े रहे। ऐसे में एक दिन सरकारी लोग कारखाने की जाँच-पड़ताल करने आए।

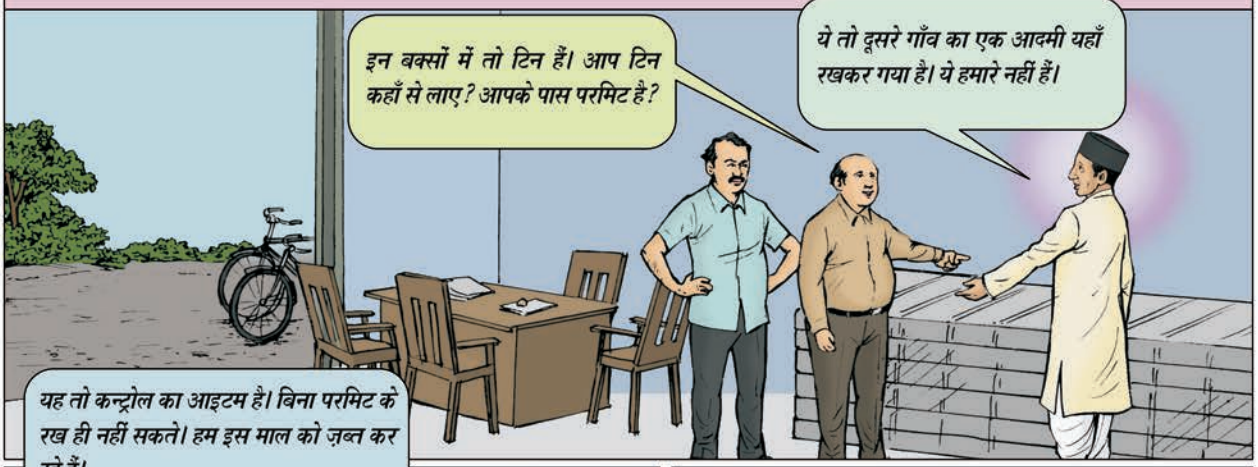

सरकारी लोगों के जाने के कुछ ही दिनों बाद वह टिन रखकर जाने वाला आदमी कारखाने पर आया।

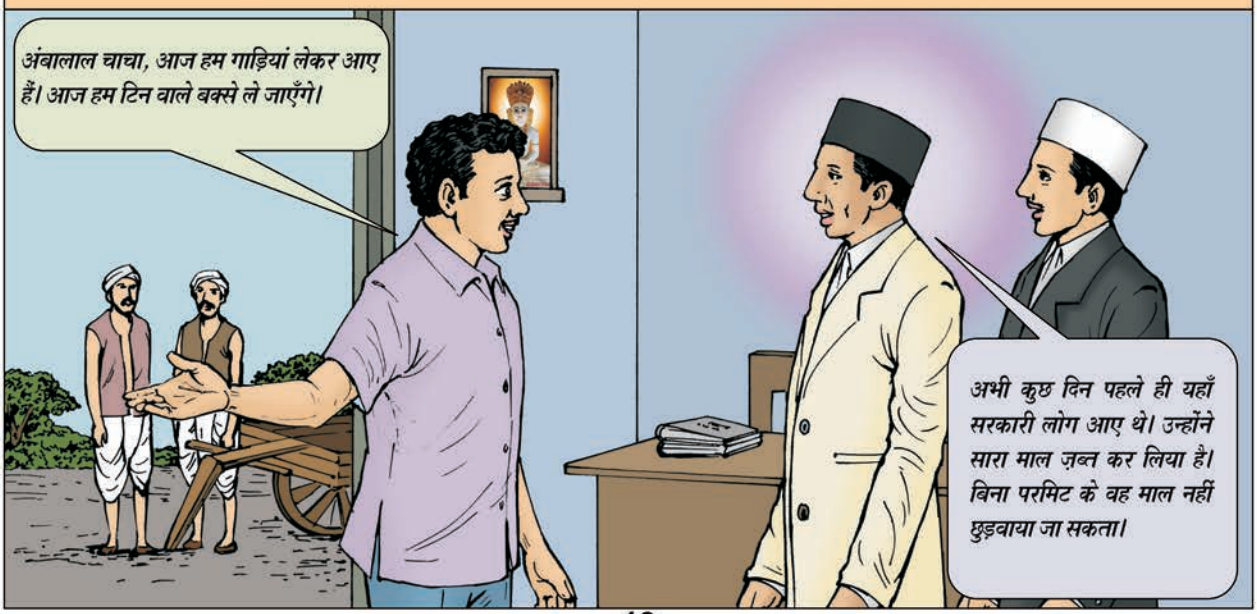

चाचा, हम परमिट दिखाकर ही गाड़ियां लेकर आए हैं।

ऐसा? तो फिर आप अपना माल ले जाओ।

वह आदमी भागीदार की देखरेख में सारे बक्से गाड़ी में रखकर ले गया।

अभी कुछ ही दिन हुए होंगे कि वापस सरकारी लोग कारखाने पर आए।

यहाँ टिन से भरे हुए बक्से थे, वे कहाँ गए?

मैंने आपसे कहा था न कि वे बक्से हमारे नहीं हैं। जिसके थे, वह आदमी आकर ले गया है।

लेकिन वह माल तो हमने ज़ब्त कर लिया था। आप सरकारी माल कैसे दे सकते हैं?

जिस आदमी का माल था, वह आया इसलिए उसे ले जाने दिया।

आपको तो पता था कि माल ज़ब्त किया हुआ है। ज़रूर आपने ही वह माल बेच दिया है।

वह आदमी कह रहा था कि "वह आपको परमिट दिखाकर आया है, इसीलिए हमने उसे ले जाने दिया"।

अगर सच में आपने टिन नहीं बेचे हैं तो हमें उस आदमी का पूरा पता दीजिए।

फिर तो अवश्य ही उसने झूठ बोलकर आपको फँसाया है। हमें कोई भी परमिट दिखाने आया ही नहीं है।

अंबालाल भाई ने उन लोगों को अपने गाँव के आदमी का नाम-पता वगैरह दे दिया। सरकारी लोगों ने तुरंत भादरण गाँव में पूछताछ की। तहसीलदार ने उस आदमी को ढूँढ निकाला और बहुत धमकाया।

क्यों भाई? सरकार को धोखा देता है? परमिट दिखाए बगैर सरकार की मालिकी के टिन की हेराफेरी करता है? सरकारी नियमों का भंग हुआ है, क्या इसकी कुछ समझ है?

अरे, साहब! आप क्या बात कर रहे हैं? कौन से टिन? क्या बात है? मुझे कुछ नहीं पता। मैंने टिन की कोई हेराफेरी की ही नहीं है। मुझ पर गलत इल्ज़ाम लगाया गया है। आप मेरे घर की तलाशी ले सकते हैं।

उस आदमी के घर से टिन नहीं मिले इसलिए वह तो आराम से निर्दोष छूट गया। सरकारी लोग वापस अंबालाल भाई के कारखाने पर आए।

आपने जिस आदमी के बारे में बताया था, वह तो निर्दोष साबित हुआ। आपके कारखाने से सरकारी ज़ब्ती का माल गायब हुआ है। यानी आपने ही काला बाज़ार में वे टिन बेच दिए हैं, आप पर ऐसा गुनाह लगा है और आपके नाम का वॉरन्ट निकला है।

उस शाम ५:३० बजे अंबालाल भाई अपने घर के अंदर के कमरे में बैठे हुए थे। तब पुलिस वाला वॉरन्ट दिखाकर उन्हें थाने ले गया। पुलिस थाने में जो इंस्पेक्टर बैठा था, वह लगभग तीस साल का एक सुंदर युवक था। उसका नाम अहमद मियाँ था। पटेल को देखते ही उसकी तीक्ष्ण नज़र ने पूरी परिस्थिति को भाँप लिया।

WANTED

आप पर फौजदारी केस है। आप कैसे इस केस में फँस गए?

साहब, आपको कैसे पता चला कि "मैं निर्दोष हूँ और फँस गया हूँ?"

अंबालाल भाई ने विस्तार से इंस्पेक्टर को बता दिया कि वे इसमें कैसे फँस गए।

ओहो! ऐसी बात है? आप थोड़ी देर बैठिए, मैं नमाज़ पढ़कर आता हूँ।

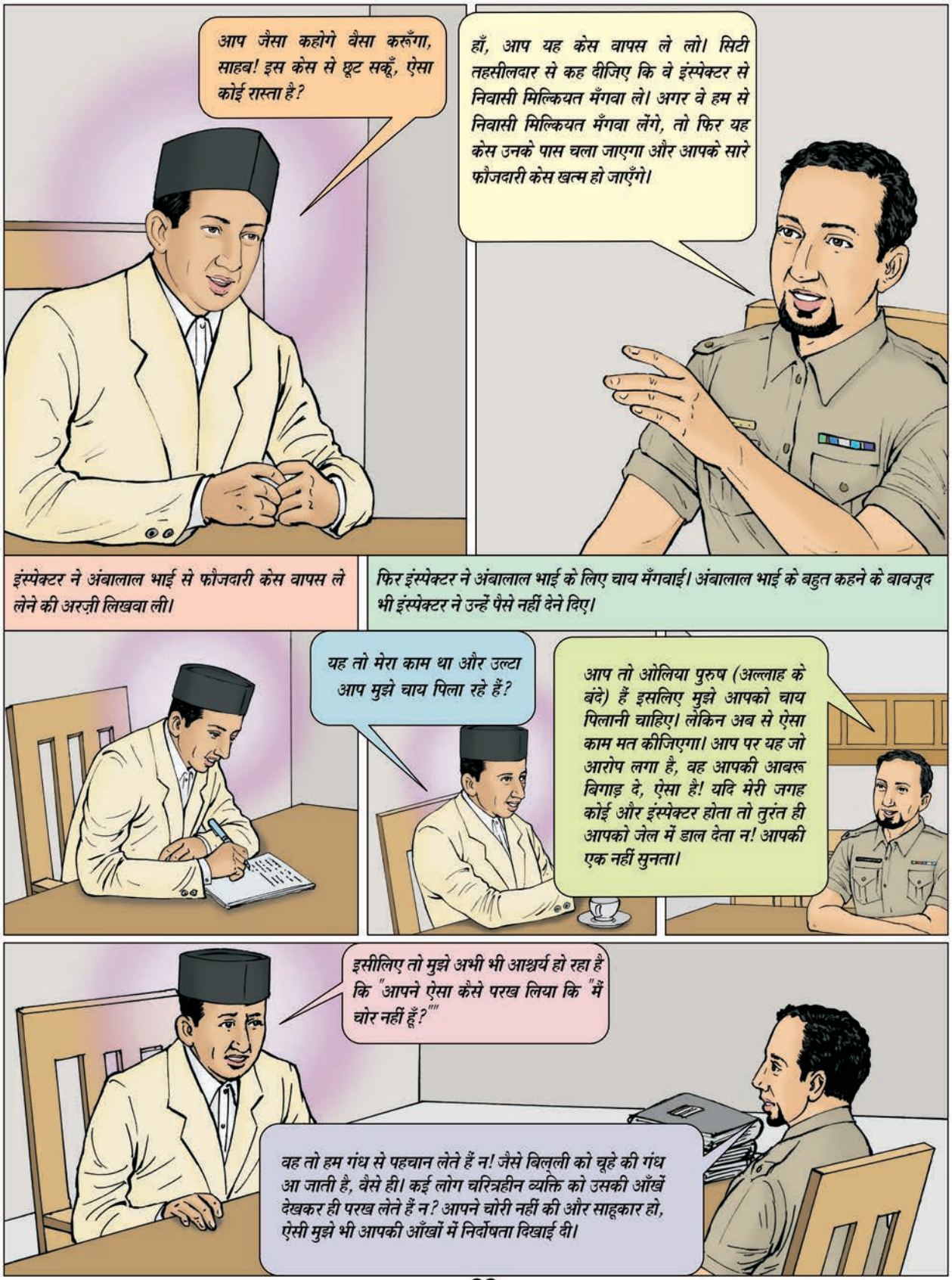
आप जैसा कहोगे वैसा करूँगा, साहब! इस केस से छूट सकूँ, ऐसा कोई रास्ता है?
हाँ, आप यह केस वापस ले लो। सिटी तहसीलदार से कह दीजिए कि वे इंस्पेक्टर से निवासी मिल्कियत मँगवा ले। अगर वे हम से निवासी मिल्कियत मँगवा लेंगे, तो फिर यह केस उनके पास चला जाएगा और आपके सारे फौजदारी केस खत्म हो जाएँगे।
इंस्पेक्टर ने अंबालाल भाई से फौजदारी केस वापस ले लेने की अरज़ी लिखवा ली।
फिर इंस्पेक्टर ने अंबालाल भाई के लिए चाय मँगवाई। अंबालाल भाई के बहुत कहने के बावजूद भी इंस्पेक्टर ने उन्हें पैसे नहीं देने दिए।
यह तो मेरा काम था और उल्टा आप मुझे चाय पिला रहे हैं?
आप तो ओलिया पुरुष (अल्लाह के बंदे) हैं इसलिए मुझे आपको चाय पिलानी चाहिए। लेकिन अब से ऐसा काम मत कीजिएगा। आप पर यह जो आरोप लगा है, वह आपकी आबरू बिगाड़ दे, ऐसा है! यदि मेरी जगह कोई और इंस्पेक्टर होता तो तुरंत ही आपको जेल में डाल देता न! आपकी एक नहीं सुनता।
इसीलिए तो मुझे अभी भी आश्चर्य हो रहा है कि "आपने ऐसा कैसे परख लिया कि "मैं चोर नहीं हूँ?""
वह तो हम गंध से पहचान लेते हैं न! जैसे बिल्ली को चूहे की गंध आ जाती है, वैसे ही। कई लोग चरित्रहीन व्यक्ति को उसकी आँखें देखकर ही परख लेते हैं न? आपने चोरी नहीं की और साहूकार हो, ऐसी मुझे भी आपकी आँखों में निर्दोषता दिखाई दी।

जब वे घर पर आए, तब उनकी पहचान वाले अंबु भाई पाठक नामक व्यक्ति उनकी राह देख रहे थे। उन्होंने कन्स्ट्रक्शन में डिप्लोमा किया था और अंबालाल भाई से काम के बारे में अनुभव और जानकारी लेने उनके यहाँ आते रहते थे।

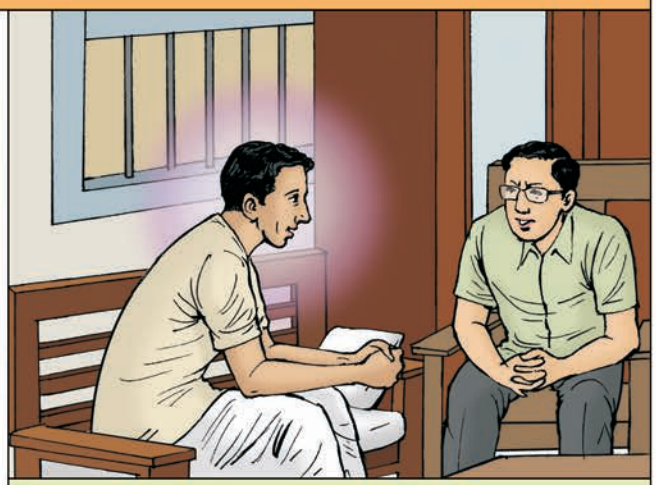

अंबालाल भाई ने अपने फँसने की सारी बात पाठक को सुना दी।

अहमद मियाँ ने अंबालाल भाई से जो लिखवाया था, उसे सिटी तहसीलदार ने देखा और केस की पूरी डिटेल्स सुनीं।

उसी दिन उन्होंने पूरा केस खत्म कर दिया और अंबालाल भाई को फँसाव से छुड़वा दिया।

किसी भी प्रकार के भोगवटे* के समय वे गहराई तक जाकर ढूँढ निकालते थे कि उसके लिए मूलतः खुद का कौन सा दोष ज़िम्मेदार है और उनका प्रयास उससे छूटने का ही रहता था।

*भोगवटे -(सुख या दुःख का असर, भुगतना)

बचपन से ही अंबालाल भाई को सामान उठाने की आदत नहीं थी। सामान उठाने के लिए उन्हें कोई न कोई मिल ही जाता था। १० साल की नन्ही उम्र में भी उन्हें कभी सामान नहीं उठाना पड़ा। जो लोग उन्हें लेने आते, उनके नौकर इनका सामान उठा लेते। उनका इतना प्रभाव था कि उन्हें कभी भी सामान उठाने का समय ही नहीं आया।

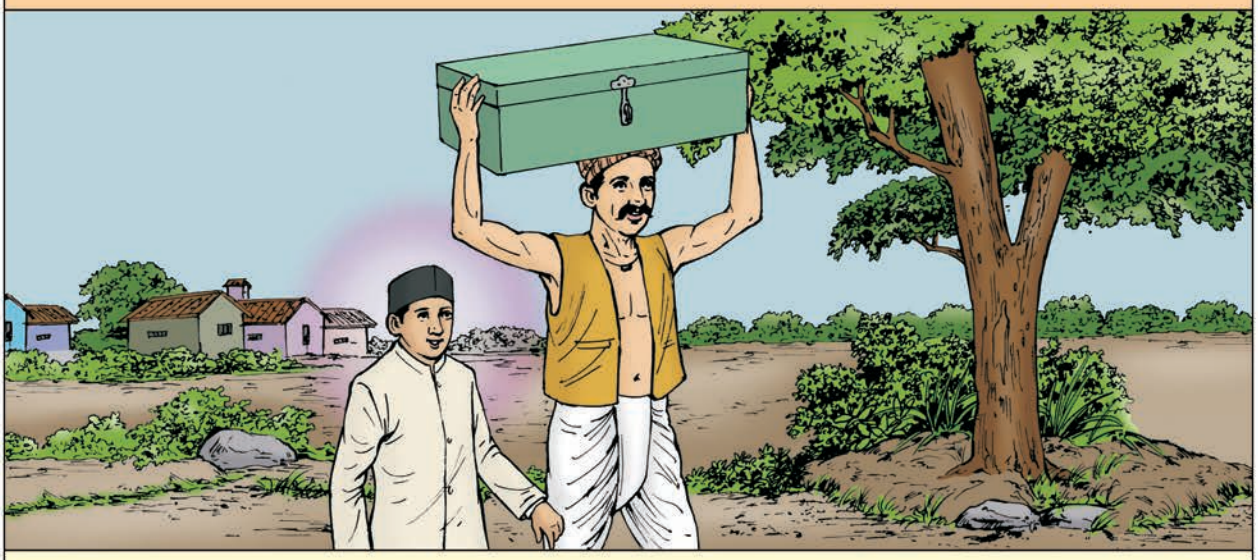

अंबालाल भाई को चीज़ों का संग्रह करने का आग्रह या आसक्ति नहीं थी। वास्तव में ज़रूरत की कम से कम चीज़ें ही रखने की आदत थी। लेकिन शहर में रहने वाले नागरिकों से सीखा कि सफर में बिस्तरा ले जाना चाहिए। लोगों का देखकर बिस्तरे की आदत पड़ गई थी। बिस्तरे की वजह से उनका बहुत प्रभाव पड़ता।

एक बार बड़ौदा जाते समय उन्होंने ओढ़ने-बिछाने के सामान के साथ थोड़े से कच्चे हाफूस आम भी बिस्तरे में भर लिए। इस वजह से बिस्तरा अच्छा खासा भारी हो गया। बड़ौदा स्टेशन पर उतरकर...

बिस्तरा भारी था इसलिए मज़दूर अपने आप सिर पर नहीं रख पा रहा था, तो अंबालाल भाई ने उसके सिर पर रख दिया।

प्लेटफॉर्म पार करके स्टेशन से बाहर आए।

अंबालाल भाई ने मज़दूर को पैसे देकर भेज दिया। थोड़ी देर राह देखी, लेकिन घोड़ागाड़ी उन्हें लेने नहीं आई। इसलिए वे परेशान हो गए।

लेकिन बिस्तरा भारी था, तो वे क्या करते? फिर उन्हें आधे घंटे तक राह देखनी पड़ी। इतना समय व्यर्थ हो जाने से उनकी परेशानी और बढ़ गई।

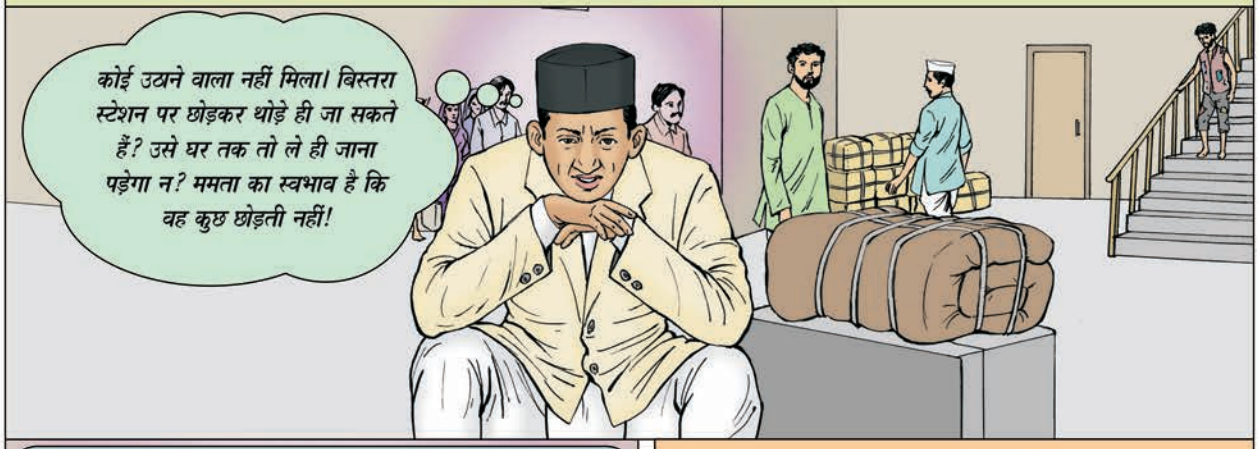

इसके बाद से ट्रेन में सोने के लिए सिर्फ एक चद्दर और पतला तकिया रखते थे। जितनी चीज़ें बैग में समा जाएँ, उतनी ही ले जाते थे।

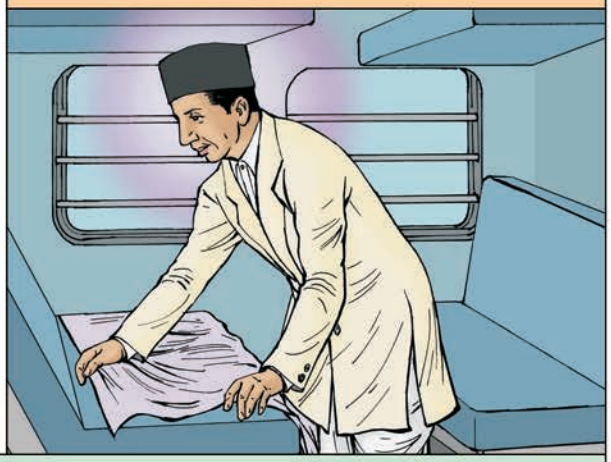

इस तरह जितना भी समझ में आ जाता, वे तुरंत ही खुद की बात छोड़ देते थे। मार पड़ते ही तुरंत छोड़ देते और फिर से गलती न हो, ऐसा दृढ़ निश्चय कर लेते थे।

अंबालाल भाई सादगीभरा जीवन व्यतीत करते थे। उनके भागीदार ने उन्हें सेकन्ड क्लास-अपर क्लास में ही सफर करने की सलाह दी। इसलिए १९४२ से उन्होंने अपर क्लास में सफर करना शुरू तो कर दिया, लेकिन उन्हें अच्छा नहीं लगता था। अपर क्लास में गिने-चुने लोग सफर करते थे और फिर वे एटिकेट वाले होते थे। अंबालाल भाई का ऐसे लोगों के साथ मेल नहीं बैठता था, क्योंकि वे लोग बहुत खटपट वाले लगते थे।

उस मुसाफिर ने तो काफी प्रश्न पूछकर उनका एड्रेस ठीक से समझ लिया और एक दिन मुंबई उनके यहाँ मिलने आ गए। वे अपना काम करवाना चाहते थे। ऐसे लोग जब प्रश्न करें कि, कहाँ रहते हैं और क्या करते हैं, तब अंबालाल भाई तो सही जवाब दे देते। उन्हें झूठ बोलना नहीं आता था। इसलिए बहुत से लोग उनसे फायदा उठाते थे।

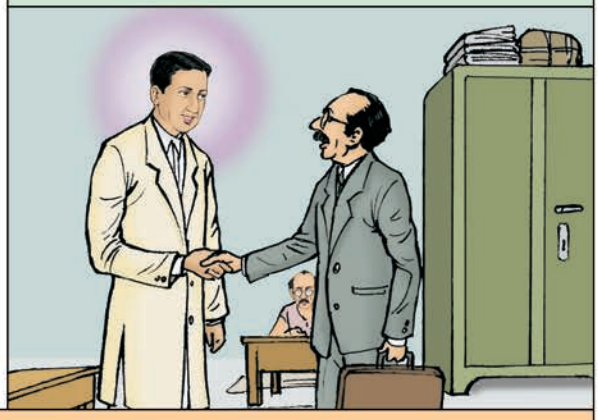

इसलिए ऐसे लोगों की मुसीबत से बचने के लिए उन्होंने थर्ड क्लास से ही सफर करना पसंद किया। थर्ड क्लास में काफी भीड़ रहती थी। सीट पर बैठने की जगह ही नहीं होती थी। अंबालाल भाई, एक ऐसा मज़बूत, बड़ा बैग रखते, जो उठाने में आसान हो। थर्ड क्लास में जाते ही जहाँ खाली जगह दिखे, वहाँ बैग रखकर उस पर बैठ जाते थे।

कई बार थर्ड क्लास डिब्बा इतना खचाखच भरा होता था कि बैग रखने की भी जगह नहीं होती थी।

थोड़ा खिसककर लड़कों ने बैठने की जगह बना दी।

ट्रेन के सफर में मुंबई से बड़ौदा जाते वक्त हर एक व्यक्ति के मन में ऐसा ही रहता है कि, "मैं बड़ौदा जा रहा हूँ"।

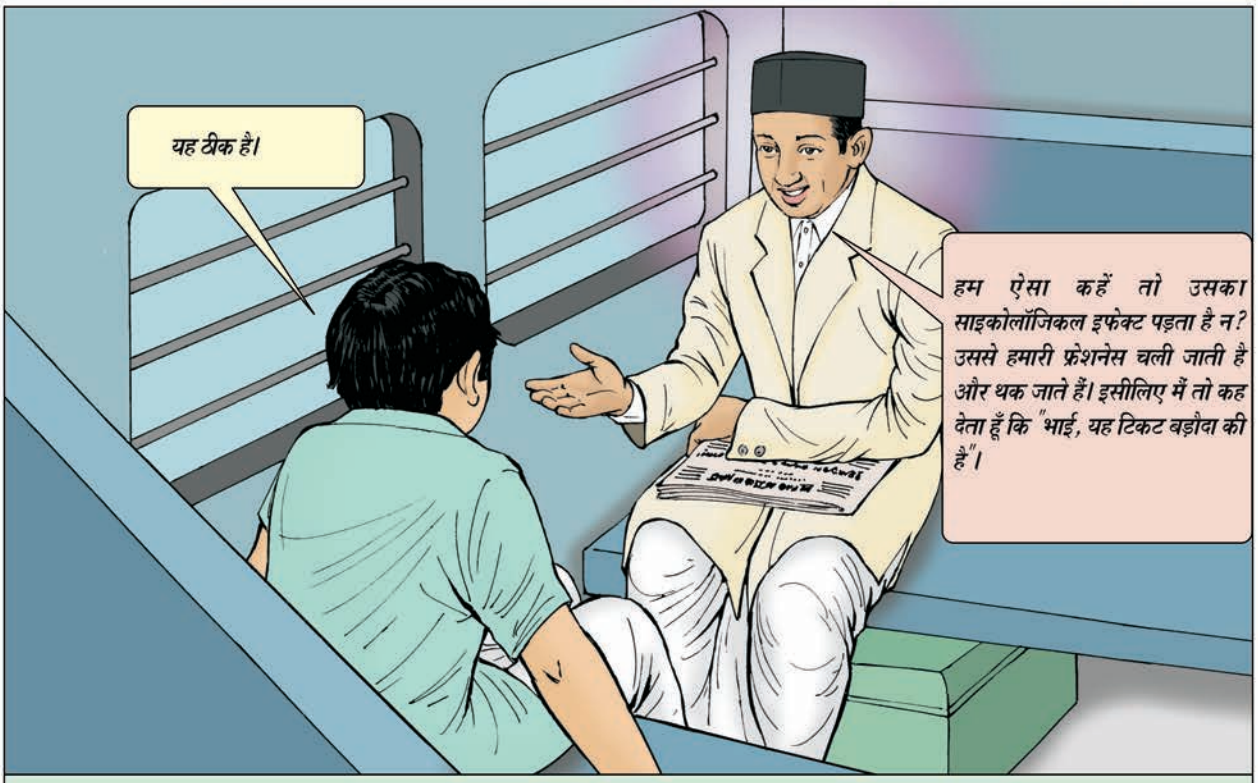

यों उन्हें हमेशा ऐसी जागृति रहती थी। इसीलिए कभी भी उन्हें सफर की थकान नहीं लगती थी और हमेशा फ्रेश रहते थे और उतने समय के लिए वे मुक्ति का आनंद अनुभव कर सकते थे।

अंबालाल भाई के मामा जी के बेटे को आदत पड़ गई थी कि जितने पैसों की ज़रूरत हो, वे उतने पैसे अंबालाल भाई की ज़ेब से निकाल लेते थे। क्षत्रिय परिवार में परवरिश होने की वजह से किसी के आगे हाथ फैलाना और मर जाना, दोनों उन्हें एक जैसा लगता था।

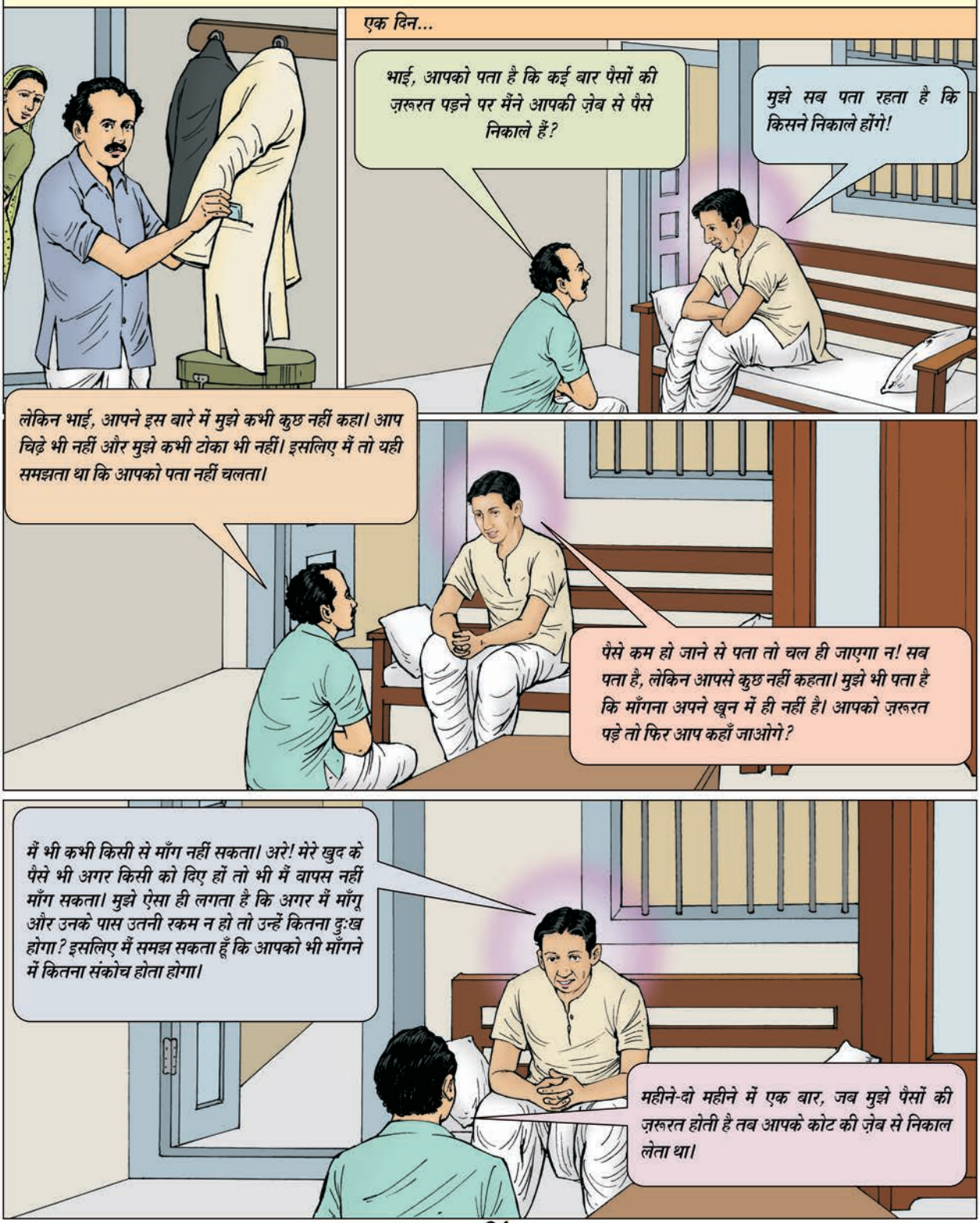

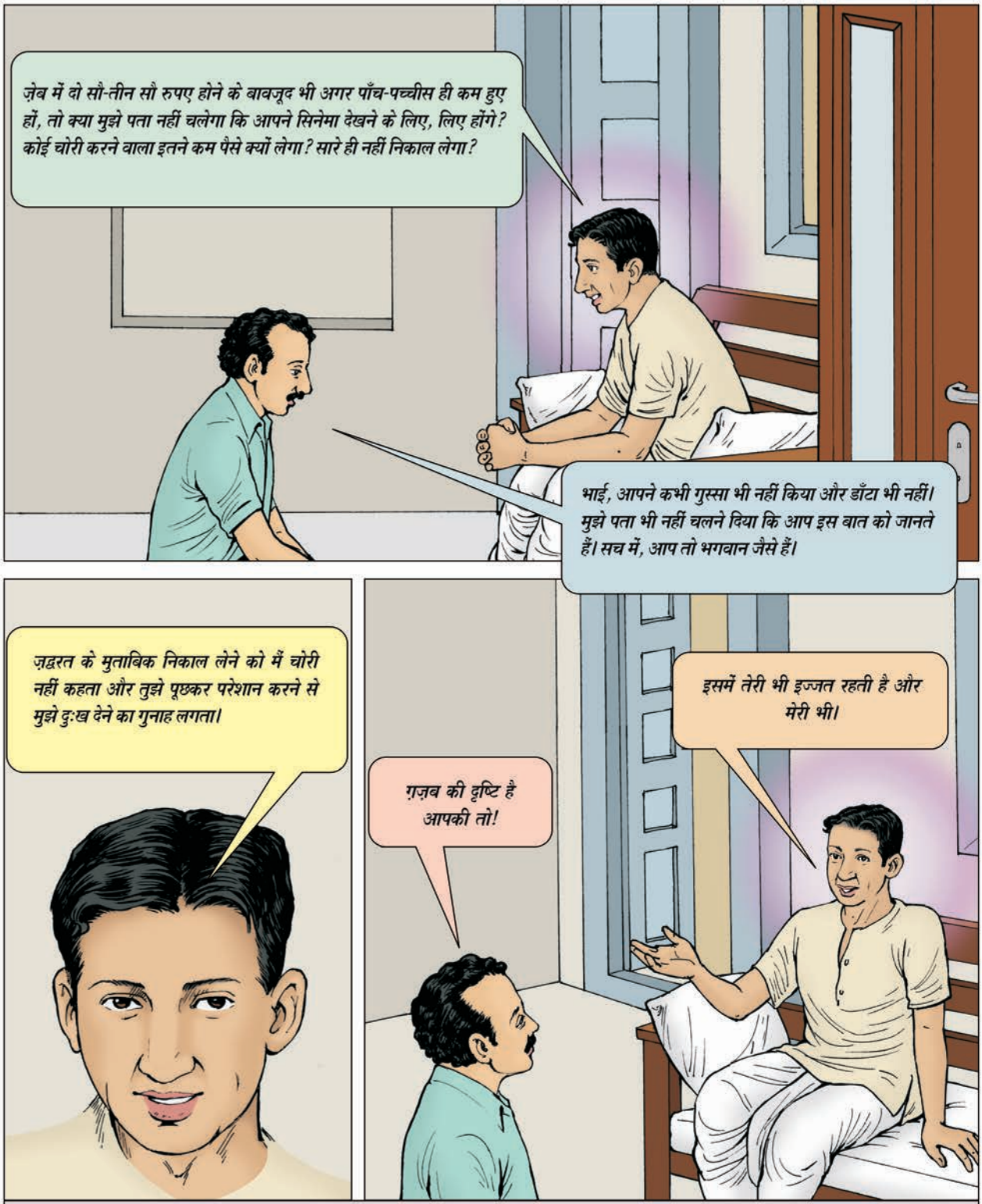

अंबालाल भाई के संपर्क में आने से लोगों में परिवर्तन आ जाता था। जिन्होंने भी उनके बर्ताव को सही देखकर, खुद की समझ बदल ली, उनका तो हृदय परिवर्तन हो गया और वे सज्जन बन गए।

अंबालाल भाई के पड़ोस में एक धनिक बनिए मोहन भाई सेठ रहते थे। अंबालाल भाई की ही तरह लंबा कोट पहनते थे और सुंदर भी थे। वैसे बहुत ही सरल स्वभाव के और अंबालाल भाई के प्रति हृदय से बहुत ही भाव रखने वाले। एक सुबह मोहन भाई दातुन कर रहे थे, तब अंबालाल भाई उनके घर के पास से गुज़रे।

मोहन भाई तो हाथ में दातुन लिए ही अंबालाल भाई को घर के अंदर ले गए और अच्छे से चाय पिलाई।

मोहन भाई के पिता जी और चाचा जी, इन दोनों के साथ अंबालाल भाई की दोस्ती थी, साथ उठते-बैठते थे। वे अंबालाल भाई से आदर सहित बात करते थे। अंबालाल भाई तो हृदय के भाव देखकर व्यक्ति की कीमत आंकते थे। उनकी नज़रों में मोहन भाई एक बहुत ही भले और भाव वाले व्यक्ति थे। लेकिन मोहन भाई के पिता जी, चाचा जी और घर के सभी लोग उन्हें "पागल" कहते थे।

देखिए न, काफी समय से मैंने मोहन को एक दुकान लेकर दी है। उससे कहता हूँ कि भाई, चाहे कैसे भी तू मुझे रोज़ के दस रुपए कमाकर दे, लेकिन वह इतने भी नहीं ला पाता। पता नहीं कहाँ से ऐसा पागल हमारे यहाँ आ गया?

क्यों मोहन भाई, फादर का आदर तो करना चाहिए न? उन्हें आपकी शिकायत क्यों करनी पड़ती है? आप कुछ कमाते क्यों नहीं?

मेरे पिता जी कहते हैं कि चाहे कैसे भी तू दस रुपए कमाकर ला। ज्यादा-कम तोलकर, गलत तरह से ज्यादा कीमत लगाकर भी कमाई कर! लेकिन मुझे ऐसे गलत तरह से नहीं कमाना है। मेरे पिता जी के पास तो काफी दौलत है। लाखों रुपए कमाए हैं, तो फिर मैं क्यों इतनी उठापटक करके गलत करूँ?

आप गलत तरह से कमाई नहीं करते, वह तो ठीक है। लेकिन अंत में तो माँ-बाप अपनी जायदाद आपको ही देंगे न! इसलिए उनके लिए भाव मत बिगाड़ो।

कैसा समय आ गया है! इतना सीधा और भला इंसान, लेकिन उसे गलत तरह से कमाना नहीं आया इसलिए "पागल" मानते हैं और जिन्हें कमाना आता है, वे सारे सयाने और समझदार माने जाते हैं। कोई पागल भी यदि कमा सके तो वह सयाना माना जाता है!

चाचा जी, यह तो अच्छा है कि मरते वक्त कुछ साथ नहीं ले जा सकते। अगर ले जा सकते न, तो मेरे पिता जी पाँच लाख का कर्ज़ मुझ पर छोड़ जाते। हज़ार-हज़ार के नोट जमा करके ले जाते।

ऐसी गिनती तो मुझे भी नहीं आती। सही में, क्या बुद्धि है इसकी!

बाद में अंबालाल भाई ने मोहन भाई के पिता जी से बात की।

इतने सीधे और भले इंसान को आप "पागल" कहते हैं, शर्म नहीं आती? घर के ही लोग उसे "पागल" कहेंगे तो कैसे चलेगा? देखो, फिर से ऐसा मत कहना! वह तो पिछले जन्म का साधु है। आपके घर तो संत पुरुष पधारे हैं।

हम तो इसे कहते हैं कि, कमाना नहीं हो तो सब कुछ त्यागकर उपाश्रय में चला जा।

नहीं, नहीं, मुझे उपाश्रय नहीं जाना है। वहाँ तो महाराज साहब की सेवा करनी होती है। मुझसे नहीं होगी।

इसके बाद से उनके पिता जी ने उनके बारे में गलत कहना बंद कर दिया।

अंबालाल चाचा, अब तक तो आपने घर में मेरा अपमान होता हुआ देखा है, लेकिन बाहर जिन जगहों पर मेरा अपमान होता है, वह भी मुझे आपको दिखाना है।

ओहोहो! यह तो ग़ज़ब का पुरुष है। कितनी निखालसता!

मोहन भाई अंबालाल भाई को एक दुकान पर ले गए। वहाँ जो सेठ थे और दूसरे दो-तीन लोग थे, वे सब बातों-बातों में मज़ाक करने वाले। उन्होंने मोहन भाई की सरलता नाप ली थी। अंबालाल भाई के सामने ही वे मोहन भाई का मज़ाक उड़ाने लगे।

ऐसा बोलना आपको शोभा देता है क्या? किसका मज़ाक उड़ा रहे हो? ये कौन हैं, इसका कुछ पता है आपको?

हाँ, हम पहचानकर ही कह रहे हैं।

इस इंसान की सरलता का फायदा उठा रहे हो आप? ऐसा अपमानजनक बोला जाता होगा कहीं? पता है, ये कौन हैं? अभी बनिए के रूप में आए हैं, लेकिन पिछले जन्म के संत पुरुष हैं, ये तो! आपको पता नहीं है कि ऐसा करने से आपका खुद का कितना नुकसान हो रहा है। अब से फिर इनका मज़ाक उड़ाना बंद कर देना!

जब से अंबालाल भाई ने डाँटा, उस दिन से तीनों ने मोहन भाई सेठ का मज़ाक उड़ाना बंद कर दिया। उन्हें उस दृष्टि से देखना भी छूट गया।

इसी तरह अन्य एक दुकान पर दरज़ी भी मोहन भाई सेठ को अपमानित करके तंग करता था। अंबालाल भाई ने उसे भी डाँटा और मज़ाक करने के लिए मना किया और "मोहन भाई सेठ" कहना शुरू करवाया।

छोटे-छोटे बच्चे भी मोहन भाई को बहुत तंग करते और मज़ाक उड़ाते! जब वे बाहर निकलते, तब बच्चे पीछे से आकर उनकी धोती खींचते! मोहन भाई के चिढ़ने पर बच्चे और भी मस्ती करते और फिर तालियाँ बजाकर हँसने लगते!

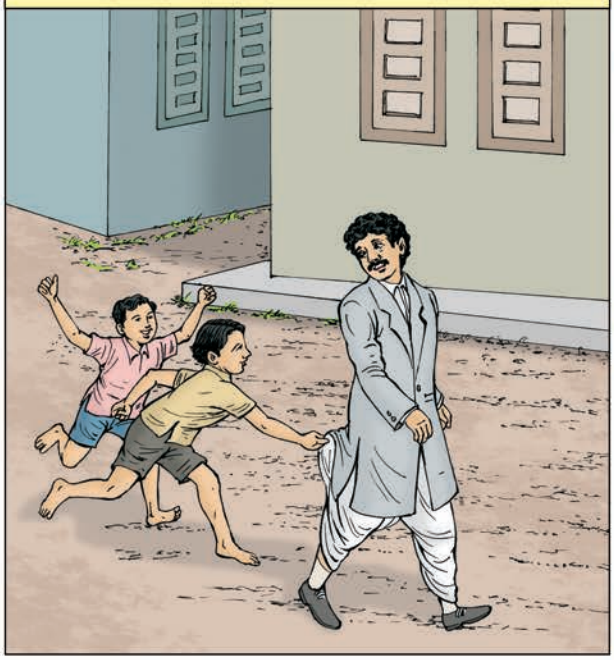

अंबालाल चाचा! आप हर रोज़ एक घंटे मुझे अपने साथ रहने देंगे?

अरे! एक नहीं, बल्कि दो घंटे। बस! रोज़ दो घंटे आप मेरे साथ ही रहना।

मोहन भाई को अंबालाल भाई के साथ घूमते देखकर उन बच्चों ने उनका मज़ाक उड़ाना बंद कर दिया! अंबालाल भाई ने बच्चों से भी "मोहन भाई सेठ" कहलवाकर नमस्कार करवाया।

वास्तव में अद्‌भुत पुरुष हैं! खुद का ऐसा अपमान हुआ था, मुझे वह दिखाने में भी उन्हें कोई हिचकिचाहट नहीं हुई! ऐसी बात तो मैं भी गुप्त रखता हूँ। कितने महान व्यक्ति हैं! इसी आश्चर्य की वजह से मुझे इन्हें अपने साथ रखना अच्छा लगता है। मेरे वैराग्य वाले विचारों को भी इनकी विचारशीलता से पुष्टि मिल रही है।

मोहन भाई की माता जी का नाम विजी बा था। वे बहुत भली और अच्छे स्वभाव की थीं। एक बार वे अंबालाल भाई के पास मोहन भाई की शिकायत करने आईं।

अंबालाल भाई, इस मोहन से कुछ कहो न! मुझे बहुत तंग करता है।

क्यों, क्या हुआ विजी बा?

अंबालाल भाई ने उन्हें आश्वासन दिया कि वे मोहन भाई को समझाएँगे।

अंबालाल भाई ने जाकर मोहन भाई को डाँटा...

क्यों मोहन भाई, माँ से सोना माँगते हो? ऐसे कहीं माँगा जाता होगा? माँ को इस तरह तंग करते हैं क्या?

मोहन भाई ने सुन तो लिया, लेकिन बाद में वे फिर से विजी बा को धमकाने लगे।

एक तो मुझे सोना नहीं देती और ऊपर से अंबालाल चाचा से शिकायत करती हो! हमारी बातें उनसे कहने की क्या ज़रूरत थी?

विजी बा दूसरे दिन फिर से अंबालाल भाई के पास गई।

अंबालाल भाई, देखिए न! मोहन तो मुझे धमकाता ही रहता है। डाँटता है कि "हमारी बात अंबालाल भाई से क्यों कही!"

कभी किसी की शिकायत नहीं करने वाली भली बहन, उनसे बेटे के लिए ऐसी शिकायत सुनकर अंबालाल भाई खड़े हो गए।

अंबालाल भाई तुरंत ही विजी बा के साथ उनके घर गए।

मोहन भाई, यह क्या हो रहा है? माँ को दुःख क्यों दे रहे हो?

नहीं, अंबालाल चाचा, मैंने कुछ नहीं किया। बा से पूछ लीजिए! बोलो बा, क्या मैं तुम्हें दुःख देता हूँ?

ऐसा कहकर विजी बा को धमकाना मत, समझ गए? वे तो अभी आपके दबाव में आ जाएँगी। लेकिन इस तरह माँ को धमकाते हो और गहनों की माँग करते हो? यह आप ठीक नहीं कर रहे, समझे? आपने विजी बा को दुःख देकर गुनाह किया है, इसलिए हम आपको दंड देंगे। जाओ, आज से हमारा और आपका मिलना-जुलना बंद! हम आपको हमारे साथ रखते हैं, वह भी आज से बंद!

मोहन भाई की उम्र तब अच्छी खासी थी। बड़ी उम्र होने के बावजूद भी अंबालाल भाई का कहा मानकर उन्होंने विजी बा को दंडवत् प्रणाम किया। माँ-बेटे के दृश्य को देखने के लिए घर के सारे लोग जमा हो गए थे। सब के बीच मोहन भाई ने माँ को प्रणाम किया।

लेकिन उस दिन से मोहन भाई ने विजी बा को तंग करना छोड़ दिया।

एक बार मोहन भाई सेठ इन्कम टैक्स के मामले में तकलीफ में आ गए थे। जैसे-तैसे करके छूट तो गए, लेकिन बहुत घबरा गए थे।

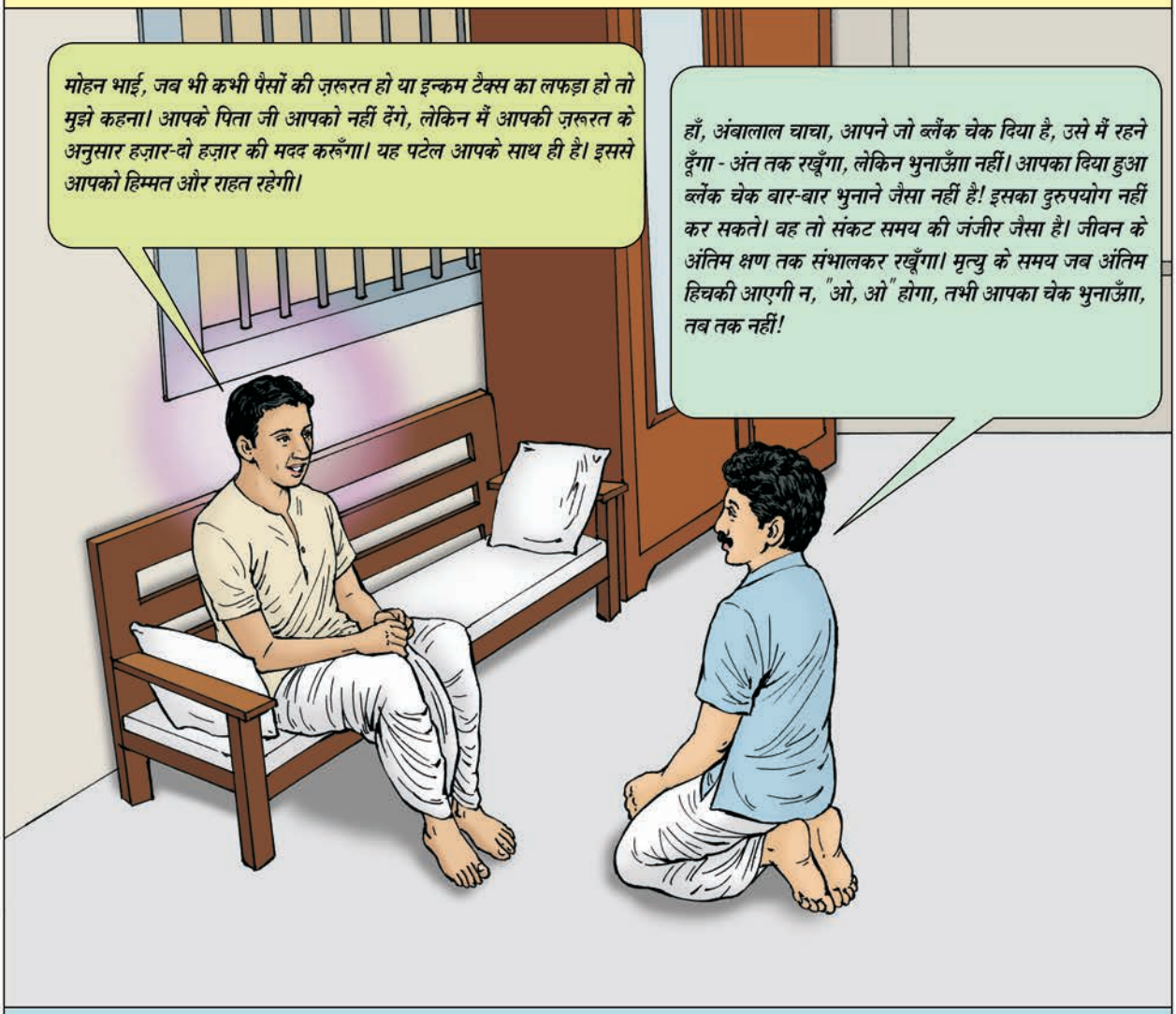

कितनी समझदारी भरी सेटिंग! "मृत्यु के समय आपका चेक भुनाऊँगा", ऐसा कहकर मोहन भाई सेठ ने "अंतिम श्वास के समय मुझे भगवान का नाम हाज़िर रहे और दैवी रक्षण कुदरती तौर पर मिल जाए" ऐसी भावना कर ली।

अंबालाल भाई! जो कि ज्ञान होने के बाद "दादा भगवान" के नाम से प्रसिद्ध हुए, यहाँ दिए गए उनके जीवन प्रसंगों से ऐसा प्रमाण अवश्य मिलता है कि ज्ञान होने से पहले भी उनके पास ऐसी समझ पूर्व की लिंक के आधार पर थी ही। विविध प्रसंगों में खुद या सामने वाला व्यक्ति फँस गया हो, तब समझदारी से बाहर निकलने की चाबियों का उपयोग करके व्यवहार सुलझाया या सुलझवाया। परिणाम-स्वरूप सामने वाला व्यक्ति भी उनके प्रति पूज्य-भाव का अनुभव करता था। हर एक प्रसंग में खुद का या सामने वाले का हित कैसे हो, और अंत में समझदारी से आध्यात्मिक तरीके से कैसे वह मोक्ष के लिए आत्यंतिक कल्याण को प्राप्त करे, उसका यहाँ अनुभव होता है।

बालविज्ञान की अन्य प्रकाशित पुस्तकें

गुजराती, अंग्रेजी और हिन्दी भाषा में उपलब्ध

- स्टोरी बुक
- मानव से महामानव (नील) सीरीज़ बुक (६-भाग)
- मन्थली मैगज़ीन — बच्चों के लिए अक्रम एक्सप्रेस / युवाओं के लिए Akram youth
- दादा भगवान सचित्र
- गेम्स
- V.C.D. & D.V.D.

वेबसाइट

kids.dadabhagwan.org

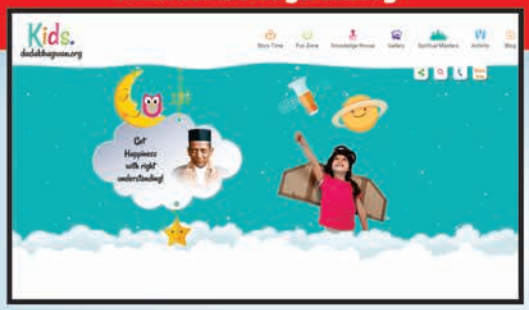

youth.dadabhagwan.org

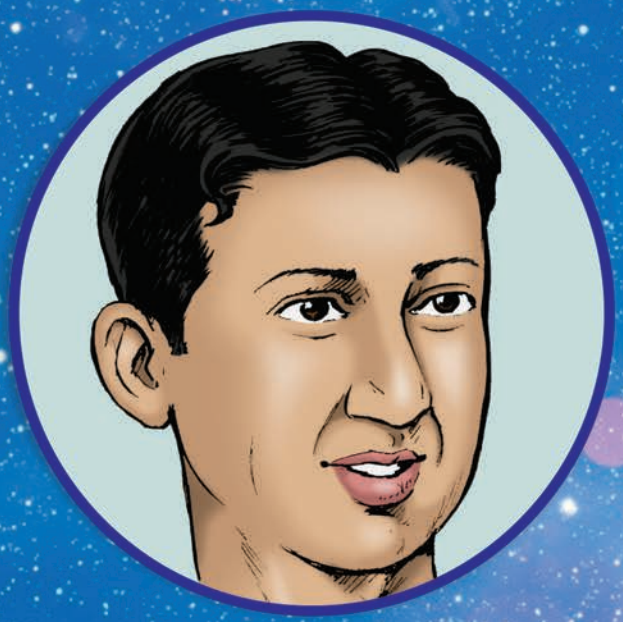

खुद के अनुभवों से सार निकालना बहुत अच्छी समझ है। जबकि दूसरों के अनुभवों से सार निकालना उससे भी आगे की दृष्टि कहलाती है।

परम पूज्य दादाश्री के पास ऐसी ही उच्च दृष्टि थी। मनुष्य ही नहीं लेकिन जीवमात्र के व्यवहार का अवलोकन करके, उसमें से सार निकालकर, खुद उसमें से सीखते थे। वे हर एक सीख को खुद के जीवन में उतार लेते थे, उनमें जीवन को सरल और शांतिमय बनाने की अद्‌भुत कला देखने को मिलती है। इस पुस्तक में ऐसी बहुत सी बातों का उल्लेख हुआ है।